P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-9* May- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन

प्रमोद जोशी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
स्कूल ऑफ एजूकेशन,
हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
महेन्द्रगढ़, हरियाणा

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य दूरस्थ शिक्षा प्रणाली मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु सोद्देश्य विधि से कोटा खुला विश्वविद्यालय का चयन करने के पश्चात, स्नातक स्तर के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्राओं) का चयन आकस्मिक चयन विधि के आधार पर किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली– दूरस्थ शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणाम इंगित करते हैं कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली मे स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सम्बन्धी, पाठ्यवस्तु सम्बन्धी, सामान्य कथन के प्रति अभिवृत्ति व मूल्याकंन के प्रति अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टि से अन्तर पाया गया है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली मे स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पायी गयी।

मुख्य शब्द : दूरस्थ शिक्षा प्रणाली, अभिवृत्ति।

प्रस्तावना

शिक्षा के महत्व को देखते हुए भारतीय संविधान के अनुच्छेद–45 मे विवेचित किया गया है कि देश के प्रत्येक बालक एवं किशोर को शिक्षा की वे सब सुविधाएँ मिलेंगी जिसके वे अधिकारी हैं। शिक्षा को अधिक महत्वपूर्ण व सार्थक बनाने हेतु सरकार द्वारा विभिन्न कार्यक्रम व योजनाएँ बनाई जा रही हैं, संगठनों को विकसित किया जा रहा है जैसे अनौपचारिक शिक्षा, समाज शिक्षा, सतत शिक्षा, तथा पत्राचार शिक्षा इन्हीं के माध्यम से उभरा दूरस्थ शिक्षा का प्रत्यय शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है। दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा का जन्म मुख्यतः इस दर्शन से हुआ है कि समाज उन व्यक्तियों को शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था करे जो किन्हीं विशेष कारणों से शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा औपचारिक शिक्षा के वैकल्पिक साधन के रूप में विकसित हुई। दूरस्थ शिक्षा के उदय से उन सभी लोगों को लाभ हुआ जो शिक्षा ग्रहण करना चाहते थे। आज के युग मे दूरस्थ शिक्षा का महत्व निरन्तर बढ़ता जा रहा है। क्योंकि यह साधारण शिक्षा के साथ ही व्यवसायिक शिक्षा भी प्रदान कर रही है। आज जो लोग कम शिक्षा गृहण करके अपने कार्य व्यवसाय तथा नौकरी में लग जाते हैं। वह निश्चित ही अपनी आगे की शिक्षा को निरन्तर रखते हुए ज्ञान को विस्तृत रूप में ग्रहण कर सकते हैं। इस दृष्टि से दूरस्थ शिक्षा ने देश की शिक्षा व्यवस्था में अपनी भूमिका को सशक्त व प्रभावी बना दिया है।

दूरस्थ शिक्षा औपचारिक शिक्षा के प्रभावशाली विकल्प के रूप में उभरकर सामने आयी हैं। शिक्षा उन्मुख समाज व शिक्षित रूप से पिछडे या विकास की ओर अग्रसित समाज के लिए इसका विशेष महत्व है। इसमें जीवन पर्यन्त शिक्षा के सार्वभौमिकरण को पूर्ण करने की सामर्थ्य है। दूरस्थ शिक्षा ज्ञान ग्रहण करने का वो संगठित उपाय हैं। जो कि व्यक्ति विशेष अपने जीवन काल वातावरण अभिरूचि तथा समय उपलब्धि के अनुसार इसे प्राप्त कर सकता है। अतः यह शिक्षा आज के प्रजातान्त्रिक युग की माँग को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 11 वीं पंचवर्षीय योजना में नामांकन अनुपात को 5 प्रतिशत बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित किया। इस लक्ष्य को प्रज्ञप्त करने के लिए उच्च शिक्षा का विकास एवं विस्तार अत्यन्त आवश्यक है। दूरस्थ शिक्षा इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हो सकती है। जिसका कारण इसमे पाया जाने वाला लचीलापन

और इसके स्वतंत्र कार्यक्रम है। दूरस्थ शिक्षा का अभिप्राय एक ऐसे शैक्षिक साधन से हैं जिसमें अधिगमकर्ता और शिक्षक में पर्याप्त दूरी पायी जाती है। दूरस्थ शिक्षा मे विद्यार्थी को स्वयं ही अपनी समस्याओं का समाधान खोजना होता है तथा शिक्षण हेतु रणनीति तैयार करनी होती है एवं प्रश्नों को खोजना होता है।

दूरस्थ शिक्षा से सम्बन्धित पूर्व में विभिन्न शोध कार्य किये गये जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं–मिश्रा, लक्ष्मी (1984) ने दूरस्थ शिक्षा के प्रत्यय एवं भारतवर्ष में इसकी उपादेयता, कपूर अर्चना (1992) ने कार्यरत व अकार्यरत शिक्षार्थियों की दूरस्थ शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का, सिंह मजुषा (1995) ने दूरस्थ विद्यार्थियों की अध्ययन आदते व शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन आदि द्वारा दूरस्थ शिक्षा की समस्याओं, पाठयक्रम, उददेश्य, मूल्याकंन, व्यक्तित्व सें सम्बन्धित शोधकार्य हुए। जैन,संगीता (2007) ने दूरस्थ व औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, डेविड और फेलिक्स (2008) ने नाइजीरिया में दूरस्थ छात्रों के सीखने के प्रति अभिवृत्ति एवं धारणाओं, जे, काट्ज (2002) ने कालेज के छात्रों में दूरस्थ शिक्षा के प्रति वरीयता व प्रभावित रूख, वेलिंगटन (2005) ने वेस्ट इंडीज के छात्रों के विश्वविद्यालय के नजरिए से वैकल्पिक साधनों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में, एलफोर्ड (2005) दूरस्थ माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले प्रौढ़ शिक्षार्थियों को प्रभावित एवं प्रेरित करने वाले कारको, वेल्स, व अन्य (2010) ने दूरस्थ शिक्षा, उच्च शिक्षा नीति और क्रमिक सत्त शिक्षा के लिये सामंजस्य की आवश्यकता का अध्ययन आदि शोधकर्ताओं के अध्ययनो से ज्ञात होता हैं कि अधिकांश स्नातक स्तर के विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षा को केवल एक वैकल्पिक साधन के रूप में ही स्वीकार करते है। शोधार्थी का विचार है कि प्रस्तुत शोध प्रकरण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के लक्ष्य को प्राप्त करने में बहुत ही सहायक सिद्ध होगा। शोधार्थी को जिज्ञासा हुई कि औपचारिक शिक्षा –संस्थाओं के इतने विकास के बावजूद भी मुक्त शिक्षा को क्यों प्रारम्भ किया गया ? दूरस्थ शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की क्या अभिवृत्ति हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर ढूढ़ने के लिए शोधार्थी ने प्रस्तुत समस्या का चयन किया।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्न हैं –

1. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् छात्राओ ंकी अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् छात्रों ंकी अभिवृत्ति का अध्ययन।
3. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति की अभिवृत्ति मे कोई अन्तर नही होता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सोद्देश्य विधि से कोटा खुला विश्वविद्यालय का चयन किया गया। स्नातक स्तर के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्राओं) का चयन आकस्मिक चयन विधि के आधार पर किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली– दूरस्थ शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग दूरस्थ शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के अध्ययन हेतु किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रदत्तों का विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है– मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व क्रान्तिक अनुपात ।

परिणाम एवं विवेचना

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति को ज्ञात करने के लिए माध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया है तथा छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति में अन्तर को ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की भी गणना की गयी है। जिसका विवरण निम्न तालिका में है–

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् छात्राओ ंकी अभिवृत्ति का अध्ययन

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सम्बन्धी, पाठ्यवस्तु सम्बन्धी, सामान्य कथन के प्रति अभिवृत्ति, व मूल्याकंन के प्रति अभिवृत्ति को ज्ञात करने के लिए दूरस्थ शिक्षा अभिवृत्ति परीक्षण प्रदान किया गया। इस परीक्षण से प्राप्त अंकों के आधार पर उनका मध्यमान और प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया। जिसे निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है –

तालिका संख्या 1

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् छात्राओ ंकी अभिवृत्ति का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
छात्र	143.79	20.74

उपर्युक्त तालिका द्वारा ये ज्ञात होता है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं कि अभिवृत्ति का मध्यमान (143.79) है। प्रमाणिक विचलन (20.74) से ज्ञात होता है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रो कि अभिवृत्ति में मध्यमान से अंको का बिखराव कितना है।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् छात्रों की अभिवृत्ति का अध्ययन

दूरस्थ शिक्षाप्रणाली मे स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रो की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सम्बन्धी, पाठ्यवस्तु सम्बन्धी, सामान्य कथन के प्रति अभिवृत्ति व मूल्याकंन के प्रति अभिवृत्ति को ज्ञात करने के लिए दूरस्थ शिक्षा अभिवृत्ति परीक्षण प्रदान किया गया। इस परीक्षण से प्राप्त अंकों के आधार पर उनका मध्यमान और प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया। जिसे निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है–

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-9* May- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका संख्या 2

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली मे स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रो की अभिवृत्ति का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

दूरस्थ शिक्षाप्रणाली	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
छात्र	163.38	16.16

उपर्युक्त तालिका द्वारा यह ज्ञात होता है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली मे स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की अभिवृत्ति का मध्यमान (163.38) है। प्रमाणिक विचलन (16.16) से ज्ञात होता है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रो का मध्यमान से अंको के बिखराव कितना है।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली मे अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली मे स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सम्बन्धी, पाठ्यवस्तु सम्बन्धी, सामान्य कथन के प्रति अभिवृत्ति व मूल्याकंन के प्रति अभिवृत्ति को ज्ञात करने के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया है तथा छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति में अन्तर को ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की भी गणना की गयी है। जिसका विवरण निम्न सारणी में है–

तालिका संख्या 3: दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र– छात्राओं की अभिवृत्ति का मध्यमान प्रमाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	163.38	16.16	1.91	0.05
छात्राएँ	143.79	20.74		

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि छात्रों का मध्यमान (163.38) है जबकि छात्राओं का मध्यमान (143.79) है इससे ज्ञात होता है कि छात्रों की दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पायी गयी है। प्रमाणिक विचलन निकालने पर छात्रों का (16.16) तथा छात्राओं का (20.74) जो कि स्पष्ट करता है कि छात्राओं के अंकों में विचलनशीलता अधिक है। क्रान्तिक अनुपात 1.91 से स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर छात्र एवं छात्राओं की दूरस्थ शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है अर्थात् दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के प्रति छात्र व छात्राएं समान अभिवृत्ति नहीं रखते है। जिसका कारण यह हो सकता है कि छात्र एवं छात्राओं की मुक्त शिक्षा के प्रति समान विचारधारा नहीं है तथा उनका दृष्टिकोण में भी समानता न होने के कारण उनके दूरस्थ शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः हमारे द्वारा बनाई गयी परिकल्पना दूरस्थ शिक्षा प्रणाली मे स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र– छात्राओं कि अभिवृत्ति मे कोई अन्तर नहीं हैं अस्वीकृत सिद्ध हुई है।

दण्ड आरेख 1

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति

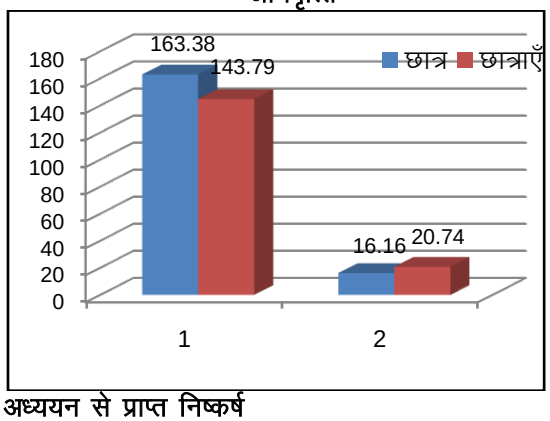

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

प्राप्त प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषणोपरान्त एवं व्याख्या के उपलब्धि के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त होता है कि–दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र – छात्राओं की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सम्बन्धी, पाठ्यवस्तु सम्बन्धी, सामान्य कथन के प्रति अभिवृत्ति व मूल्याकंन के प्रति अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टि से अन्तर पाया गया है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पायी गयी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *एलफोर्ड (2005) दूरस्थ माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले प्रौढ़ शिक्षार्थियों को प्रभावित एवं प्रेरित काने वाले कारको, जनरल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी*
2. *जे काट्ज (2002) कालेज के छात्रों में दूरस्थ शिक्षा के प्रति वरीयता व प्रभावित रूख, इन्टरनेशल डिसरटशेन एबसट्रेक्ट*
3. *जैनसंगीता (2007) दूरस्थ व औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन, जनरल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी*
4. *कपूर, अर्चना (1992), "दूरस्थ शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन, एम.एड. डिजरटेशन, डी.ई.आई., आगरा*
5. *मिश्रा, लक्ष्मी (1982), "दूरस्थ शिक्षा के प्रत्यय व भारत वर्ष में उसकी उपादेयता का अध्ययन" एम.एड. डिजरटेशन, डी.ई.आई. आगरा*
6. *रिचर्ड (2001), "हेल्थ साइकोलॉजी ", प्रथम संस्करण वर्थ पब्लिशर्स, न्यूयार्क।*
7. *सिंह मंजूषा (1995), "दूरस्थ विद्यार्थियों की अध्ययन आदते व शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन", एम.एड. डिजरटेशन, डी.ई.आई. आगरा।*
8. *थामस, ई (2007), "दूरस्थ शिक्षा में संलग्न बालक एवं बालिकाओं का तनाव स्तर का अध्ययन" जनरल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी*
9. *वेलिंगटन (2005) वेस्ट इंडीज के छात्रों के विश्वविद्यालय के नजरिए से वैकल्पिक साधनों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में, इन्टरनेशल डिसरटशेन एबसट्रेक्ट*
10. *वेल्स, व अन्य (2010) ने दूरस्थ शिक्षा, उच्च शिक्षा नीति और क्रमिक सतत शिक्षा के लिये सामंजस्य की आवश्यकता का अध्ययन, इन्टरनेशल डिसरटशेन एबसट्रेक्ट*